जैन कन्या पाठशाला (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय

तृतीय प्रश्न पत्र

विशिष्ट रचनाकार : प्रेमचंद

एम ए (प्रथम वर्ष)

द्वितीय सेमेस्टर

डॉ अनामिका जैन

सहायक आचार्य

हिन्दी विभाग

बेटों वाली विधवा

सन् 1932 में प्रकाश में आयी यह कहानी प्रेमचंद के अंतिम दौर की कहानियों में से है। यहाँ तक प्रेमचंद की कलम लोगों के दिलो-दिमाग में अपना अलग ही स्थान बना चुकी थी। फूलमती के पति पं. अयोध्यानाथ का निधन हो चुका था, उसके चार बेटे और एक बेटी थी- कामतानाथ, उमानाथ, दीनानाथ, सीतानाथ और बेटी कुमुद। जो शादी के

कामतानाथ दफ्तर में पाँच रूपये पर नौकर था, उमानाथ डॉक्टरी पास कर चुका था, दीनानाथ बी.ए. में फैल होकर पत्रिकाओं में लेख लिखता था, सीतानाथ एम.ए. कर रहा था। पूरी कहानी में चारों भाई पिता की संपत्ति हथियाने और माँ के पास रखे जेवर लेने पर लगे रहते है | सभी को अपना-अपना हिस्सा चाहिए था। लेकिन कुमुद की शादी के बारे में

कुमुद की शादी 40 वर्ष के एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति दीनदयाल के साथ कर दी जाती हैं | शादी के बाद माँ कुमुद को खाली हाथ घर से न जाए इसीलिए कुछ पैसे देती है। लेकिन बेटी का हृदय बहुत विशाल है, वह माँ को ही उस पैसे को वापस दे देती है।

कहानी का अंत बड़ा ही दुखद है। माँ और बेटी को दुख देने के कारण कामतानाथ टाईफाइड से मर जाता है। दीनानाथ को छह महीने की सजा हो जाती है। उमानाथ रिश्वत लेते पकड़ा लिया जाता है और उसकी सनद छीन ली जाती है।

समीक्षा

इस कहानी में प्रेमचंद ने पहले ही परदे में चारों भाइयों की शादी दिखाई है, जिसका संवाद इस प्रकार है- चारों बहुएँ एक-से-एक बढ़कर आज्ञाकारिणी। जबकि कहानी के मध्य में सीतानाथ के विवाह की बात होती है, जो इस प्रकार है- सीतानाथ सबसे छोटा था। सिर झुकाये भाइयों की स्वार्थ भरी बातें सुन-सुनकर कुछ कहने के लिए उतावला हो रहा था। अपना नाम सुनते ही बोला- मेरे विवाह की आप लोग चिन्ता न करें।

इस कहानी के निम्न बिंदु इस प्रकार हैं -

1. वृद्ध समस्या
2. पारिवारिक कलह (संघर्ष)
3. अनमेल विवाह
4. ग्रामीण जीवन
5. रीति-रिवाज

धन्यवाद